Dy – बुद्धिमान और मूर्ख निर्माता मत्ती ७:२४-२७ और लूका
६:४६-४९ | 1

– Save This Page as a PDF–

बुद्धिमान और मूर्ख निर्माता

मत्ती ७:२४-२७ और लूका ६:४६-४९

खोदाई: दो घर बनाने वालों के बीच समानताएं और अंतर उन लोगों को कैसे दर्शाते हैं जिन्होंने यीशु को सुना? येशुआ यहां किस प्रकार की प्रतिबद्धता की मांग कर रहा है? तूफ़ान क्या दर्शाता है? स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के लिए किस प्रकार की धार्मिकता आवश्यक है? विकल्प क्या है? क्या उस पर आधारित है? यह कहाँ ले जाता है?

चिंतन: यदि हम मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करते हैं, तो क्या हम उसे प्रभु बनाते हैं? क्यों या क्यों नहीं? आपके जीवन में आए आखिरी तूफ़ान के दौरान, आपने अपने जीवन की नींव के बारे में क्या सीखा? उस नींव को मजबूत करने के लिए आपको क्या तोड़ना होगा? इस प्रक्रिया में आपको दूसरों की सहायता की कैसे आवश्यकता है? आपके जीवन के इस बिंदु पर, क्या आपको और अधिक सीखने की अत्यधिक आवश्यकता है या जो आपने पहले ही सीखा है उसका अभ्यास करने की आवश्यकता है?

सच्ची धार्मिकता के अपने सोलहवें और अंतिम उदाहरण में, अच्छे चरवाहे ने अपने श्रोताओं को एक विकल्प दिया। यदि वे धार्मिकता की फरीसी व्याख्या पर निर्माण जारी रखते, तो यह रेत की नींव पर होता और ढह जाता। या वे टोरा की धार्मिकता की उसकी व्याख्या पर निर्माण कर सकते थे और मसीहा की ठोस चट्टान पर निर्माण कर सकते थे और जीवित रह सकते थे।

जो पहली नज़र में एक बहुत ही सरल कहानी लगती है वह वास्तव में उन लोगों पर एक शक्तिशाली टिप्पणी है जिनके पास ज्ञान से भरे हुए दिमाग हैं, लेकिन विश्वास से रहित हैं। यह उन लोगों के बीच अंतर करता है जो आज्ञा मानते हैं और जो नहीं मानते हैं। ऐसे लोग हैं जो उद्धारकर्ता को सुनते हैं और उसके संदेश का जवाब देते हैं, जबकि अन्य लोग वही सटीक संदेश सुनते हैं और उसे अनदेखा कर देते हैं। हमारे प्रभु का स्पष्ट सबक यह है कि दोनों के बीच अंतर के शाश्वत परिणाम होते हैं।

आरंभ करने के लिए, हमें मसीहा के प्रभुत्व के महत्व को समझने की आवश्यकता है। बाइबल मांग करती है कि हम स्वीकार करें कि वह प्रभु है, और उसके आधिपत्य के सामने झुकें। वह हमेशा और हमेशा प्रभु है, चाहे कोई उसके आधिपत्य को स्वीकार करे या न करे या उसके अधिकार के प्रति समर्पण करे। हम उसे प्रभु नहीं बनाते – वह पहले से ही प्रभु है! नई वाचा में उन्हें कम से कम ४७४ बार लॉर्ड (ग्रीक: कुरियोस) कहा गया

Dy – बुद्धिमान और मूर्ख निर्माता मत्ती ७:२४-२७ और लूका
६:४६-४९ | 2

है। अकेले प्रेरितों के काम की पुस्तक में उन्हें ९२ बार प्रभु के रूप में संदर्भित किया गया है, जबकि उन्हें केवल दो बार उद्धारकर्ता कहा गया है। निस्संदेह, प्रारंभिक मसीहा समुदाय में, मसीहा का आधिपत्य उसके संदेश का केंद्र था। यह निर्विवाद है कि उनका आधिपत्य मुक्ति के लिए मानी जाने वाली खुशखबरी का हिस्सा है। स्पष्ट रूप से, मसीहा पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करने और उसे अपना प्रभु बनाने का निर्णय दो अलग-अलग निर्णय नहीं हैं, बल्कि एक ही हैं।

फिर से यीशु ने फरीसी यहूदी धर्म की धार्मिकता का विषय उठाया, एक ऐसी धार्मिकता जो यहोवा के लिए पूरी तरह से अस्वीकार्य है और जो किसी भी तरह से किसी व्यक्ति को उसके राज्य के लिए योग्य नहीं बनाएगी। इससे पहले अपने पहाड़ी उपदेश में, उन्होंने कहा था: क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जब तक तुम्हारी धार्मिकता फरीसियों और टोरा-शिक्षक से अधिक नहीं होगी, तुम निश्चित रूप से स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करोगे (मत्ती ५:२०)। प्रभु के पहले दृष्टांत में (देखें Dx – झूठे भविष्यवक्ताओं से सावधान रहें), हमने विश्वास के सच्चे और झूठे व्यवसायों के बीच अंतर देखा। यहां, उनके दूसरे दृष्टांत में, हम वचन के आज्ञाकारी और अवज्ञाकारी श्रोताओं के बीच एक अंतर देखते हैं।

जो लोग उसके आधिपत्य को अस्वीकार करते हैं या उसकी संप्रभुता के प्रति केवल दिखावा करते हैं, उन्हें बचाया नहीं जाता है। इसका मतलब यह नहीं है कि किसी अविश्वासी के लिए ये शब्द कहना असंभव है, “यीशु ही प्रभु हैं,” क्योंकि जाहिर तौर पर वे ऐसा कर सकते हैं। लेकिन येशुआ ने स्वयं उन लोगों के विरोधाभास की ओर इशारा किया जो उसे प्रभु कहते थे लेकिन वास्तव में इस पर विश्वास नहीं करते थे। तुम मुझे हे प्रभु, हे प्रभु क्यों कहते हो, और जो मैं कहता हूं वैसा नहीं करते (लूका ६:४६)? यहां तक कि दुष्टात्माएं भी जानती हैं और स्वीकार करती हैं कि वह कौन है (मरकुस १:२४, ३:११, ५:७; याकूब २:१९)। शब्द उतने महत्वपूर्ण नहीं हैं जितना आज्ञाकारिता। जो कोई मेरे पास आता है और मेरी बातें सुनता है और उन पर अमल करता है, मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि वे कैसी होती हैं (मत्ती ७:२४ए; लूका ६:४७)। एक शिष्य न केवल यीशु के शब्दों को सुनता है, बल्कि वह उन पर अमल भी करता है और उन्हें अभ्यास में भी लाता है।

येशुआ ने सुनने वाली भीड़ से बस दूसरा गाल आगे करने, अतिरिक्त प्रयास करने, दुश्मनों को माफ करने और गरीबों को देने के लिए अपनी संपत्ति बेचने के लिए कहा था (मत्ती ५:३९-४४)। लेकिन केवल निर्देश प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं था। मुख्य बात उन पर कार्रवाई करना है। यीशु ने कहा कि जो लोग उसकी बातें सुनते हैं और उन पर अमल करते हैं वे उस बुद्धिमान मनुष्य के समान हैं जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया (मत्ती ७:२४बी; लूका ६:४८ए)। चट्टान पर निर्माण करना मसीह की नींव पर किसी के जीवन के निर्माण के बराबर है (देखें Fx – इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊंगा)।

Dy – बुद्धिमान और मूर्ख निर्माता मत्ती ७:२४-२७ और लूका
६:४६-४९ | 3

बारिश हुई, नदियाँ उठीं, हवाएँ चलीं और उस घर से
टकराईं। ये विशिष्ट प्रकार के भौतिक निर्णयों का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं बल्कि केवल हाशेम के अंतिम निर्णय का सारांश देते हैं। यहां चित्रित तूफान वह अंतिम परीक्षा है जिसका सामना हर मानव जीवन का घर करेगा। जैसे जब यहोवा मिस्रियों को मारने के लिये देश में चला, तब उसने चौखटों के ऊपर और किनारों पर खून देखा और उस द्वार के ऊपर से होकर गुजरा, और विध्वंसक को इस्राएल के पहिलौठे को छूने की अनुमति नहीं दी (इब्रानियों ११: २८); तो वही न्याय जो हानिरहित रूप से उन पर पारित हुआ वह उस घर पर भी पारित होगा जिसकी नींव मसीह और उसके वचन की चट्टान पर है (मत्ती ७:२५; लूका ६:४८)। जिनकी बुनियाद मसीहा है, वे बच जायेंगे, परन्तु जो अपना जीवन किसी और चीज़ पर आधारित करते हैं, वे रेत पर घर बनाने के समान होंगे और नष्ट हो जायेंगे।

परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस मूर्ख मनुष्य के समान है जिसने अपना घर रेत पर बनाया (मत्ती ७:२६; लूका ६:४९ए)। रेत मानवीय विचारों, दृष्टिकोणों और इच्छाओं से बनी है, जो हमेशा बदलती रहती हैं और हमेशा अस्थिर रहती हैं। रेत पर निर्माण करना आत्म-इच्छा, आत्म-संतुष्टि और आत्म-धार्मिकता पर निर्माण करना है। रेत पर निर्माण करना अशिक्षित होना है, हमेशा सीखते रहना लेकिन सत्य का ज्ञान प्राप्त करने में कभी सक्षम नहीं होना (दूसरा तीमुथियुस ३:७)।

जैसे ही बारिश हुई, धाराएँ बढ़ने लगीं, और हवाएँ चलीं और उस घर से टकराईं, वह ढह गया और उसका विनाश पूरा हो गया (मत्ती ७:२७; लूका ६:४९बी)। जो न्याय मिस्र के पहिलौठों पर आया, वह उन लोगों पर भी आएगा जो अपना घर बालू पर बनाते हैं। उनका घर पूरी तरह से ध्वस्त कर दिया जाएगा, और इसके बनाने वाले को कुछ भी नहीं बचेगा। यही उन लोगों की नियति है जो मानवीय विचारों, मानव दर्शन और मानव धर्म पर अपना जीवन बनाते हैं। ऐसा नहीं है कि उनके पास बहुत कम बचा है – उनके पास कुछ भी नहीं बचा है। उनका मार्ग ईश्वर से कमतर नहीं है, लेकिन ईश्वर का मार्ग बिल्कुल भी नहीं है। यह सदैव नरक की ओर ले जाता है। इन दोनों बिल्डरों में समानताएं थीं:

Dy – बुद्धिमान और मूर्ख निर्माता मत्ती ७:२४-२७ और लूका
६:४६-४९ | 4

सबसे पहले, उन दोनों ने सुसमाचार सुना।

दूसरा, वे दोनों एक ऐसा घर बनाने के लिए आगे बढ़े जो उनके जीवन का प्रतिनिधित्व करता हो। दोनों बिल्डरों को भरोसा था कि उनके घर खड़े रहेंगे, लेकिन एक का भरोसा प्रभु पर है जबकि दूसरे का भरोसा खुद पर है।

तीसरा, दोनों बिल्डरों ने अपने घर एक ही सामान्य स्थान पर बनाए, जो स्पष्ट रूप से एक ही तूफान की चपेट में आने से स्पष्ट होता है। दूसरे शब्दों में, उनके जीवन की बाहरी परिस्थितियाँ मूलतः एक जैसी थीं। एक को दूसरे पर कोई लाभ नहीं था। वे एक ही शहर में रहते थे, एक ही संदेश सुनते थे, एक ही बाइबल अध्ययन के लिए जाते थे, एक ही दोस्तों के साथ पूजा करते थे और संगति करते थे।

चौथा, आशय यह है कि उन्होंने एक ही तरह का घर बनाया। बाहर से उनके घर एक जैसे दिखते थे। सभी दिखावे से मूर्ख व्यक्ति बुद्धिमान व्यक्ति के समान ही रहता था। हम कह सकते हैं कि वे धार्मिक और नैतिक दोनों थे, अपने पूजा स्थल में सेवा करते थे, आर्थिक रूप से उसका समर्थन करते थे और समुदाय के जिम्मेदार नागरिक थे। ऐसा प्रतीत होता था कि वे एक ही चीज़ में विश्वास करते थे और एक ही तरह से जीते थे।

लेकिन इनका एक अंतर बहुत गहरा है. जिस व्यक्ति ने मसीह की चट्टान पर अपना घर बनाया वह आज्ञाकारी था, और जिसने अपना घर आत्मनिर्भरता की रेत पर बनाया वह अवज्ञाकारी था। एक ने अपना घर दैवीय विशिष्टताओं पर बनाया, और दूसरे ने अपनी स्वयं की धार्मिकता पर बनाया। फरीसियों और टोरा-शिक्षकों के पास धार्मिक मानकों का एक जटिल और सम्मिलित सेट था, जिसके बारे में उनका मानना था कि यहोवा के सामने उनका बहुत महत्व था। लेकिन वे रेत को स्थानांतरित कर रहे थे, जो पूरी तरह से राय और अटकलों से बना था (Ei – मौखिक ब्यबस्था देखें)। जो लोग मनुष्यों की परंपराओं का पालन करते थे, वे उन्हें परमेश्वर के वचन से भी अधिक महत्व देते थे।

हमारी वर्तमान दुनिया की बदलती नैतिकताएं भ्रमित करने वाली हो सकती हैं। हम अपने निर्णयों के लिए संस्कृति या समाज की राय को आधार बनाने के लिए प्रलोभित हो सकते हैं। यदि ऐसा है तो हमारा नैतिक दायरा टूट जाएगा। लेकिन परमेश्वर के वचन के अटल सत्य का पालन करने से स्थिरता मिलती है जो कहीं और उपलब्ध नहीं है। इसलिए, प्रभु ने कहा: जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर अमल करता है वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया (मत्ती ७:२४)।